प्रकाशनार्थ

पटना, 29 **नवम्बर।** यूनाइटेड किंगडम की रेडिंग विश्वविद्यालय और एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इन्स्टीच्यूट (आद्री) ने मिलकर आज एक दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का शीर्षक ''इम्पावरिंग मार्जिनलाइज्ड कम्युनिटीज बाई ब्रिजिंग द स्कील गैपः स्ट्रैटेजिज़ फाॅर इन्क्लूसिव अपग्रेडेषन एण्ड इम्पलाॅयबलिटी इन बिहार'' था।

पूर्व और उत्तर-पूर्व भारत के लिए नियुक्त ब्रिटेन के डिप्टी उच्चायुक्त डा0 एन्ड्रू फ्लेमिंग इस मौके पर गेस्ट आॅफ आॅनर थे। उन्होंने जाहिर किया कि बिहार का 58 प्रतिषत आबादी 25 साल से कम उम्र का है। ऐसा कोई कारण नहीं है कि बिहार फल-फूल नहीं सकता है। इसे कर दिखाने में मशीन लर्निंग (एमएल) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का कमान रखना बहुत जरूरी है। आईआईएम बेंगलूरु के प्रोफेसर रित्विक बनर्जी ने अपने एक शोध को प्रस्तुत किया। उसका शीर्षक ''क्या छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य शिक्षकों के जाति में भेदभाव करने से प्रभावित होता हैः बिहार, भारत से सबूत'' था। उन्होंने बिहारी और भारतीय बच्चों के वर्तमान मानसिक स्थिति को मापने की याचना की। यह अत्यंत जरूरी है। इस पर तुरंत अमल करना चाहिए। आगे बोलते हुए उन्होंने जिक्र किया कि मानसिक बीमारी बिहार के बहुत सारे स्कूली बच्चों में मौजूद है और इसमें शिक्षक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इसके पहले आद्री के निदेशक प्रोफेसर अजित सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी आजकल बहुत तेजी से बदल रहा है और जल्दी-जल्दी प्रयोग से हट जा रहा है। इसलिए हमें अपने कार्य क्षेत्र को सुरक्षित रखने की कोशिश करनी चाहिए। आद्री की सदस्य-सचिव डा0 अस्मिता गुप्ता ने इस कार्यशाला के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि श्रमिक बाजार में अलग-अलग व्यवसायों में लचीलापन एकदम मौजूद नहीं है और कौशल-विकास कार्यक्रमों को इस समस्या का हल निकालने का लक्ष्य बनाना पड़ेगा।

उद्घाटन सत्र के बाद दो तकनीकी सत्र हुए। देश-विदेश के कई शोधकर्त्ता, शिक्षाविद्, नीति-निर्माता और गैर-सरकारी संगठनों के सदस्यगण ने इस कार्यशाला में भाग लिया। डा0 गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

APrasad

(अभिषेक प्रसाद)